9

HkkX; lDr

क्या आपने कभी सोचा है कि सभी जीवित प्राणी ऊर्जा कहाँ से प्राप्त करते हैं। आप अनेक गतिविधियों के बारे में जानते हैं जो हमे जीवित बनाये रखती है जैसे – सांस लेना, भोजन करना, पानी पीना, अन्य इसी तरह की गतिविधियां। इन्हें आप अपने अनुभव और ज्ञान से समझ सकते हैं। परंतु अधिकतर समय हमे भान हुए बिना ही शक्ति प्राप्त करते रहते हैं। आपके साथ हमेशा ही हमारे माता–पिता का आशिर्वाद, सगे–संबंधियों का स्नेह और बड़ों का प्यार मिलता रहता है। क्या आप इस बात से सहमत है? क्या आप इन्हें एक अन्य रूप में ऊर्जा के स्रोत के रूप में अनुभव करते हैं। शायद आप यही करते हैं क्योंकि ये हमें दिखाई नही देते और न ही हमें इनका भान हो पाता है।

fVIi.kh

इसी प्रकार से हम सृष्टि से भी ऊर्जा प्राप्त करते हैं। विश्व की अनेक परम्पराओं में तथा वेद के अनुसार सूर्य से हमें सर्वाधिक ऊर्जा प्राप्त होती है। सूर्य जीवित और अजीव जगत् का केन्द्र हैं। जब हम किसी स्रोत से ऊर्जा प्राप्त करते हैं तो क्या उसे वापस नहीं लौटाते है? जब हम किसी बैंक से रूपये उधार लेते है तो क्या वापस नही लौटते हैं? अगर आप लौटाना नहीं भी चाहते हैं तो क्या बैंक प्रबंधन क्या आपसे नहीं पूंछगे? वे आपसे उधार चुकाने के लिए कहेगें। इसी तरह जब भी हमें किसी से कोई वस्तु लेते हैं तो हमें उसे वापस लौटाना चाहिए। परंतु यदि हम प्रकृति से ऊर्जा प्राप्त करते हैं तो हम प्रकृति तक उसे वापस कैसे लौटा सकते है? क्या हम सूर्य को रोशनी और गर्मी दे सकते हैं? क्या हम पौधों को आक्सीजन दे सकते हैं? क्या हम नदियों को पानी वापस लौटा सकते हैं? क्या हम प्रकृति को शुद्ध हवा लौटा सकते है? यह सब संभव नहीं है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में ऊर्जा के प्रदाता और स्रोत को वापस कुछ समर्पित करने का अद्‌भूत तरीका है। बडे–बुजुर्गों का कहना है कि यदि हमें कुछ वापस लौटाना है तो उसे हमेशा मन में (स्मरण) में रखना चाहिए। इन तरीकों से हम प्रकृति को कुछ वापस लौटा सकते हैं।

- व्यर्थ न करें।
- प्रदुर्षित न करें।
- जब आवश्यकता हो तभी प्रयोग करें।
- जरूरतमंद को सहारा दे।
- संसाधनों/स्रोतों की गुणवत्ता में संवर्धन करें।

mÌs’;

fVIi.kh

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- भाग्य–सूक्त का उच्चारण कर पाने में; और
- संक्षिप्त में भाग्य सूक्त का महत्व बता पाने में ।

9.1 HkkX; lDr

भाग्य परम् सत्ता के असीमित आनन्द की अभिव्यक्ति है।

ॐ प्रा॒तर॒ग्निं प्रा॒तरिन्द्रग्ँ॑ हवामहे प्रा॒तर्मि॒त्रा वरु॑णा प्रा॒तर॒श्विना᳚ ।

प्रा॒तर्भगं᳚ पू॒षणं॒ ब्रह्मं॑ण॒स्पतिं᳚ प्रा॒तः सोमं॑मु॒त रु॒द्रग्ँ हुं॑वेम ॥ १ ॥

prā̱tar-a̱gniṁ prā̱tar indraguṁ havāmahe |
prā̱tar mi̱trā varúṇā prā̱tar a̱śvinā̎ |
prā̱tar-bhagáṁ pū̱ṣaṇa̱ṁ brahmáṇa̱spatiṁ̎ |
prā̱tas somáṁ u̱ta ru̱draguṁ húvema || 1 ||

हे मनुष्यो ! जैसे हम लोग प्रातः काल में अग्नि को प्रातः काल में इन्द्र या सूर्य को प्रातः समय के प्राण और उदान के समान मित्र और राजा को तथा प्रातः काल में सूर्य चन्द्रमा वैश्व या पढ़ाने वालों की विचार से प्रशंसा करें। प्रातः समय ऐश्वर्य् को पुष्टि करने वाली वायु को वेद ब्रह्माण्ड या सकलैश्वर्य के स्वामी ईश्वर को समस्त औषधियों को और

प्रभात समय में फल देने से पापियों को रुलानेवाले ईश्वर या प्रशंसा करें, वैसे तुम भी प्रशंसा करो ।।१।।

प्रा॒त॒र्जितं॒ भ॑गमु॒ग्रग्ं हु॑वेम व॒यं पु॒त्र-मदि॑ते॒र्यो वि॑धु॒र्ता ।

आ॒ध्रश्चि॒द्यं मन्य॑मानस्तु॒रश्चि॒द्राजा॑ चि॒द्यं भगं॑ भ॒क्षीत्याह॑ ॥ २ ॥

prā̱ta̱r jita̱ṁ bhaga̍m u̱gaguṁ hu̍vema |
va̱yaṁ pu̱tram adite̱r yo vi̍dha̱rtā |
ā̱dhraści̱dyaṁ manya̍mānas tu̱raści̍t |
rājā̍ ci̱dyaṁ bhaga̍ṁ bha̱kṣītyāha̍ || 2 ||

हे मनुष्यो ! जो अन्तरिक्षस्थ भूमि वा प्रकाश का या विविध लोकों का धारण करने वाला (आध्रः, चित्) जो सब ओर से धारण सा किया जाता जानता हुआ शीघ्रकारी (राजा) प्रकाशमान निश्चय से परमात्मा जिस ऐश्वर्य् की प्राप्ति होने को (आह) उपदेश देता है, जिसकी प्रेरणा पाये हुए हम लोग पुत्र के समान प्रातःकाल ही उत्तमता से प्राप्त होने को योग्य तेजोमय तेज भरे हुए ऐश्वर्य को कहें इस प्रकार जिस को निश्चय से मैं (भक्षि) सेवूँ, उसकी ख्सब, उपासना करें ।।२।।

भग॒ प्रणे॑त॒-र्भग॒ सत्य॑राधो॒ भगे॒मां धि॒यमु॒दं॑व॒दद॑न्नः ।

भग॒प्रणो॑ जनय॒ गोभि॒-रश्वै॒र्भग॒प्रनृ॒भिं॑-र्नृ॒वन्तं॑स्स्याम ॥३ ॥

bhaga̱ praṇe̍ta̱r bhaga̱ satya̍ rādhaḥ̱ |
bhage̱ māṁ dhiya̱m uda̍va dada̍n naḥ |

bhaga̱ praṇo̍ ja̱naya̱ gobhi̱r aśvai̎ḥ |
bhaga̱ pranṛbhir nṛ̱vantáras syāma || 3 ||

हे सकल–ऐश्वर्ययुक्त श्रेष्ठता से प्राप्ति कराने वाले, अत्यन्त सेवा सुश्रुषा करने योग्य प्रकृतिरूप, संपूर्ण ऐश्वर्य देनेवाले ईश्वर ! आप हम लोगों के लिये इस प्रशंसायुक्त श्रेष्ठ बुद्धि को देते हुए हम लोगों की उत्तमता से रक्षा कीजिये। हे ईश्वर ! हम लोगों के लिये गौवें या पृथिवी आदि से शीघ्रगामी अश्व या पवन या बिजुली आदि से उत्तमता से हमारी उत्पत्ति दीजिये। हे सकलैश्वर्य वान! आप हम लोगों को नायक श्रेष्ठ मनुष्यों से उत्तम उत्पत्ति दीजिये जिससे हम लोग बहुत उत्तम मनुष्य हों ।।३।।

उ॒तेदानी॒ं भग॑वन्तस्स्यामो॒त प्रपि॒त्व उ॒त मध्ये॒ अह्ना᳚म् ।
उ॒तोदि॑ता मघव॒न्थ्सूर्य॑स्य व॒यं दे॒वानाग्ं॑ सुम॒तौ स्या॑म ॥ ४ ॥

u̱tedānī̱ṁ bhagávantas syāma |
u̱ta prápi̱tva u̱ta madhye̱ ahnā̎m |
u̱toditā maghava̱nt sūryásya |
va̱yaṁ de̱vānā́guṁ suma̱tau syā́ma || 4 ||

हे (मघवन्) परमपूजित भगवान ! इस समय और उत्तमता से ऐश्वर्य की प्राप्ति के समय में और दिनों में, बीच में और सूर्य उदय में और सायंकाल में हम लोग बहुत उत्तम ऐश्वर्ययुक्त हों। तथा आप्तविद्वानों की श्रेष्ठ मति में स्थिर हों ।।४।।

भग॑ ए॒व भग॑वाग्ं अस्तु दे॒वास्तेन॑ व॒यं भग॑वन्तस्स्याम ।

तं त्वा॑ भग॒ सर्व॒ इज्जो॑हवीमि॒ सनो॑ भग पुर ए॒ता भ॑वेह ॥ ५ ॥

bhagá e̱va bhagávāguṁ astu devāḥ |
tená va̱yaṁ bhagávantas syāma |
taṁ tvā́ bhaga̱ sarva̱ ijjó havīmi |
sa nó bhaga pura e̱tā bháve̱ha || 5 ||

हे सकल ऐश्वर्य के प्रदाता ! जो आप अत्यन्त सेवा करने योग्य सकलैश्वर्य्य सम्पन्न हो उन्हीं भगवान् के साथ हम विद्वान् लोग सकलैश्वर्य युक्त हों। हे सकलैश्वर्य देनेवाले ! सभी मनुष्य आपको निरन्तर स्तुति करता है वह इस समय में हमारे आगे जानेवाला हो और हे प्रदाता! आप ही हमारे अर्थ आगे ले जाने वाले हो ।।५।।

सम॑ध्व॒रायो॒षसो॑ऽनमन्त दधि॒क्रावे॑व॒ शुच॑ये प॒दाय॑ ।

अ॒र्वा॒ची॒नं व॑सु॒वि॒दं भग॑न्नो॒ रथ॑मि॒वाऽश्वा॑वा॒जिन॒ आव॑हन्तु ॥ ६ ॥

samádhva̱rā yo̱ṣasó'namantaḥ |
da̱dhi̱krāvéva śucáye pa̱dāyá |
a̱rvā̱cī̱naṁ vasúvi̱daṁ bhagán naḥ |
ratháṁ i̱vāśvā́ vā̱jina̱ āváhantu || 6 ||

रथ यान को महान् वेगवाले घोड़े या शीघ्र जाने वाले बिजुली आदि

पदार्थ जैसे है वैसे जो विशेष ज्ञानी जन पवित्र हिंसारहित धर्मयुक्त व्यवहार और पाने योग्य पदार्थ के लिये प्रभात वेला की धारणा करने वालों को प्राप्त होते है के समान अच्छे प्रकार नमते हैं वे तत्काल प्रसिद्ध हुए नवीन धनों को प्राप्त होते हुए सर्व ऐश्वर्य युक्त जन को और हम लोगों को सब ओर से उन्नति को पहुँचावें ।।६।।

अश्वा॑वती॒-गोम॑ती-र्न उ॒षासो॑ वी॒रवं॑ती॒स्सदं॑-मुच्छन्तु भ॒द्राः ।

घृ॒तं दुहा॑ना वि॒श्वत॒ः प्रपी॑ना यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभि॒स्सदा॑ नः ॥ ७ ॥

aśvā̍vatī̱r gomá̍tīr na u̱ṣasa̍ḥ |
vī̱ra va̍tī̱s sada̍m ucchantu bha̱drāḥ |
ghṛ̱taṁ duhā̍nā vi̱śvata̱ḥ prapī̍nāḥ |
yū̱yaṁ pā̍ta sva̱stibhi̱s sadā̍ naḥ || 7 ||

हे पढ़ाने और उपदेश करनेवाली ज्ञानी स्त्रियो ! तुम प्रभात वेला की तरह शोभती हुई, जिन के समीप बड़े–बड़े पदार्थ विद्यमान है अथवा किरणें विद्यमान है या वीर विद्यमान हैं जो कल्याण करने उत्तमता से बढ़ाने और सब ओर से जल को पूरा करती हुई आप हमारे स्थान को सेवो। वह तुम सुखों से हम लोगों की सर्वदैव रक्षा कीजिये ।।७।।

यो मा᳚ऽग्ने भा॒गिनग्ं॑ स॒न्तमथा॑भा॒गं चिकी॑र्षति ।

अभा॒गमं॑ग्ने॒ तं कु॑रु॒ मामं॑ग्ने भा॒गिनं॑ कुरु ॥ ८ ॥

yomā̎'gne bhā̱ginā̍guṁ sa̱ntaṁ athā̍ bhā̱guṁ cikī̍rṣati |
abhā̱gam a̍gne̱ taṁ ku̍ru̱ mā̍m agne bhā̱ginaṁ kuru̱ || 8 ||

हे अग्नि! मैं आज की स्थिति में जैसा हूँ बहुत भाग्यशाली हूँ परंतु यदि कोई मेरे भाग्य को मुझसे छीनना चाहे, तो आप उसे ऐसा करने से रोकें और मुझ पर सम्पदा और भाग्य का आशिर्वाद हमेशा बनाये रंखें।

ॐ शान्ति॒ः शान्ति॒ः शान्ति॑ः ॥

सर्वत्र शांति की स्थापना हो।

fØ;kDyki

- प्रतिदिन सुबह के समय भाग्य सूक्त का उच्चारण करें।

ikBxr iz'u& 9-1

(1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. प्र प्रा॒तर्भग॑ं .... ब्रह्म॑ण॒स्पति॑ं प्रा॒तः सोम॑मु॒त रु॒द्रग॑ं हु॑वेम ॥
2. .... भ॑गमु॒ग्रग॑ं हु॑वेम व॒यं पु॒त्र-मदि॑ते॒र्यो वि॑धु॒र्ता ।
3. उ॒तोदि॑ता मघव॒न्थ्सूर्य॑स्य व॒यं .... सुम॒तौ स्या॑म ॥
4. .... व॑सुवि॒दं भग॑न्नो॒ रथ॑मि॒वाऽश्वा॑वा॒जिन॒ आव॑हन्तु ॥
5. घृ॒तं .... वि॒श्वत॒ः प्रपी॑ना यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभि॒स्सदा॑ नः ॥

आपने क्या सीखा

- भाग्य सूक्त का शुद्ध रूप में उच्चारण करना।
- भाग्य सूक्त का मूलार्थ।

पाठांत प्रश्न

1. भाग्य सूक्त के मंत्रों को लिखिए।
2. भाग्य सूक्त के महत्त्व को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तरमाला

9.1

(1)

1. पू॒षण॒ं

2. त॒र्जित॒ं

3. दे॒वानाग्ं॑

4. अ॒र्वा॒ची॒नं

5. दुहा॑ना